पाठ 7

रात का मेहमान

—संकलित

आजाद भारत के सपने को सच करने के लिए भारत के अनेकों युवाओं ने अपने प्राणों की बाजी लगायी। अपना सर्वस्व राष्ट्र की बलिवेदी पर होम कर दिया। ऐसे ही अमर क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद रहे, जिनकी हर साँस में देश और देशवासियों के प्रति प्रेम और उत्सर्ग की भावना कूट–कूट कर भरी थी। प्रस्तुत कहानी में आजाद के व्यक्तित्व के दो पहलू दिखते हैं, जहाँ एक ओर वे ब्रिटिश सरकार को चकमा देते हुए उससे लोहा लेते हैं तथा उसी शासन में उनके नाक के नीचे क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम देते हैं वहीं दूसरी ओर 'कल्पना' जैसी प्रतिभाशाली छात्रा के संघर्ष और विपन्नता को समझते हुए नोटों से भरा ब्रीफकेस उसे थमा कर अँधेरे में गुम हो जाते हैं।

सन् 1920 ई. के शान्ति आन्दोलन के बाद भारतीय क्रांतिकारियों ने 9 अगस्त, 1925 की रात को पहला धमाका किया, लखनऊ के निकट काकोरी में। उन्होंने तत्कालीन 8 डाउन ट्रेन से जाता हुआ सरकारी खज़ाना लूट लिया। इस घटना से ब्रिटिश सरकार काँप उठी। क्रान्तिकारियों को पकड़ने के लिए गुप्तचरों को आदेश दिए गए। गिरफ्तारियाँ हुईं। तिल का ताड़ बनाया गया। बहुतों को फाँसी के फंदे नसीब हुए तो कइयों को आजन्म काला पानी। वर्षों का ठोस क्रान्तिकारी संगठन मिनटों में छिन्न–भिन्न हो गया। एक के बाद दूसरा क्रांतिकारी, ब्रिटिश गुप्तचर विभाग की नजरों का शिकार होता ही गया। किन्तु उनके सेनापति चंद्रशेखर आज़ाद, फरारी की हालत में भी ब्रिटिश सत्ता से डटकर लोहा ले रहे थे।

उन्हीं दिनों की बात है। फरवरी सन् 1930 का प्रथम सप्ताह। जाड़ा अपने अंतिम जोश में था। बारिश तेज़ थी। रात दस बजे लखनऊ चारबाग स्टेशन पर यात्रियों से अधिक तो पुलिसवाले ही थे, लेकिन चार–छह वर्दीधारी ही दिखाई दे रहे थे। बाकी सब सादे लिबास में थे। ठीक सवा दस बजे देहरादून एक्सप्रेस प्लेटफार्म नंबर एक पर आकर रुकी। मुखबिर ने सूचना दी थी कि 'आज़ाद' इसी गाड़ी से बनारस जाएँगे। उन्हें बीच में ही धर दबोचने के इरादे से पुलिसवालों ने गाड़ी का एक–एक डिब्बा छान मारा, लेकिन चंद्रशेखर 'आज़ाद' का पता न चला।

गाड़ी छूटने से थोड़ी देर पहले एक गुप्तचर दौड़ता हुआ पुलिस अफसर के पास आया और हाँफते हुए बोला कि 'आज़ाद' तो एक साहब बहादुर के वेश में बाहर निकल गए। इंसपेक्टर के चौंकने पर उसने गेट से लाया प्रथम श्रेणी का एक टिकट भी उनके आगे बढ़ा दिया जो देहरादून से बनारस तक का था – पुलिस को चकमा देने के इरादे से 'आज़ाद' बीच में उतर पड़े थे। टिकट के पीछे लिखा था – "मुझे जीवित पकड़ना असंभव है।" – आज़ाद।

अब तो अफसर को काटो तो खून नहीं। फौरन सबको इकट्ठा करके 'आज़ाद' का पीछा करने की ठानी।

हाथ में अटैची लिए 'आज़ाद' खरामा–खरामा चलकर लाटूश रोड पर आए। तभी उन्होंने पीछे मुड़कर देखा, पुलिस के बहुत से जवान दौड़ते हुए, उसी ओर आ रहे थे। बाँसमंडी चौराहे से वे तुरंत लाल कुएँ की ओर मुड़े। चलने की रफ़्तार और तेज़ कर दी। फिर ह्वीवेट रोड पर आते–आते एक सँकरी गली में मुड़े। तीन–चार मकान छोड़कर सहसा उनके हाथ की थपकियाँ दाहिनी ओर के दरवाजे पर पड़ने लगीं।

क्षणभर में एक बुढ़िया ने कुंडी खोलते हुए पूछा, "कौन ?"

"बहुत भीग गया हूँ। बारिश थमने तक शरण चाहता हूँ।"

टिमटिमाते हुए दीये की रोशनी 'आज़ाद' के चेहरे पर पड़ी। "अंदर आ जाओ, बेटा", कहकर बुढ़िया ने दरवाजा खोल दिया। मकान में दाखिल होते ही 'आज़ाद' ने झट कुंडी बंद कर दी। फिर आँगन पार करके दोनों अंदर आए। तख्त पर बैठने का इशारा करके बुढ़िया ने दीया वहीं दीवट पर रख दिया और कमरे से धोती निकाली। धोती जनानी थी। देखते ही उन्हें हँसी आ गई।

"बिटिया की है। घर में कोई मर्द तो है नहीं" बुढ़िया ने कहा।

'आज़ाद' चुप रहे। केवल तौलिया ही इस्तेमाल में लाए।

"क्या नाम है तुम्हारा?" बुढ़िया ने बड़े स्नेह से पूछा।

"जीवन में कभी झूठ तो बोला नहीं, और सच बोलने की इस समय इच्छा नहीं है", आज़ाद बोले।

"क्यों ? सच बोलने में क्या डर है ? जो भी हो, सच कहो।"

"चंद्रशेखर आज़ाद।'' 'आज़ाद' ने कहा।

''जो फरार है,। वही 'आज़ाद', जिसकी जिंदा या मुर्दा गिरफ्तारी के लिए सरकार ने पंद्रह हजार रुपयों का इनाम घोषित किया है" बुढ़िया चौंकी।

"जी, वही।"

"तुम्हारा अपराध ?"

"देशभक्ति। मैं किसी भारतीय को रोटी, कपड़ा और मकान के लिए दर–दर भटकते नहीं देख सकता। अँग्रेजी शासन अब सहन नहीं होता। भारत माँ के पैरों में पड़ी बेड़ियों को तोड़ने का संकल्प लिया है मैंने। बस, यही अपराध है मेरा।" 'आज़ाद' आवेश में कहते गए।

"धन्य है तुम्हारा संकल्प ! धन्य है वह माँ, जिसकी कोख ने ऐसा लाल जन्मा। तुम्हारे दर्शन पाकर मैं धन्य हुई।"

'आज़ाद' ने बुढ़िया को उस टिमटिमाते हुए दीये की रोशनी में गौर से देखा। उसकी आयु पचास से ऊपर होगी। उसके तेजस्वी मुख और निश्छल नेत्रों से लगा कि वह किसी कुलीन परिवार की पढ़ी–लिखी निर्धन महिला है।

तभी अचानक बुढ़िया को खाँसी का दौरा उठा। ऊपर कमरे में से निकलकर कोई तेजी से जीने की ओर लपका। 'आज़ाद' वहीं कोने में छिप गए। वह बुढ़िया की इकलौती बेटी कल्पना थी। ऊपर कमरे में बैठी पढ़ रही थी। माँ को उठा दौरा सुनकर तुरंत भागी–भागी नीचे आई और उनकी पीठ सहलाने लगी। फिर कटोरी में दो घूँट पानी पीने को दिया। स्वस्थ होकर बुढ़िया भौंचक्की–सी इधर–उधर देखने लगी। लड़की सहम गई। पूछा–"क्या है माँ ? किसे देख रही हो?"

"वह कहाँ गया, जो अभी मुझसे बातें कर रहा था ?"

कल्पना ने 'आज़ाद' की ओर देखा और माँ से पूछा, "ये कौन हैं, माँ ?"

"रात का मेहमान। बड़ा योग्य और समझदार व्यक्ति है।"

"योग्य और समझदार हूँ, तभी तो सारे दिन से भूखा हूँ" 'आज़ाद' ने सहज भाव से कहा।

"अरे बेटी, मैं तो भूल ही गई। इन्हें कुछ खिलाओ–पिलाओ," बुढ़िया ने कहा।

एक साफ–सुथरी काँसे की थाली में पराँठे और दही–बूरा लेकर कल्पना आई और उसे वहीं तिपाई पर रख दिया। हाथ धोकर 'आज़ाद' खाने बैठे, तो एक–एक पराठे के दो–दो कौर बनाकर खाने लगे। कल्पना को हँसी आ गई।

"भूख में ऐसा ही होता है। तुम कभी भूखी रही हो ?" 'आज़ाद' ने पूछा।

"हमारे लिए भूखे रहना कोई नई बात नहीं है। वैसे आधे पेट तो अक्सर ही रहते हैं।"

"फिर भी रात बारह–बारह बजे तक पढ़ना।"

"परीक्षा निकट है।"

"किस कक्षा में पढ़ती हो ?"

"एम. ए. द्वितीय वर्ष में।"

"विषय क्या है तुम्हारा ?"

"संस्कृत।"

"शाबाश ! संस्कृत पढ़ती हो तभी तो आधे पेट रहती हो।"

खाना खाने के बाद 'आज़ाद' ने दो लोटे ठंडा जल पिया। कल्पना ऊपर पढ़ने चली गई। बुढ़िया ने बताया कि कल्पना बीस रुपए मासिक की ट्यूशन करती है। उसी में किसी तरह गुजर–बसर हो जाती है। उसकी शादी भी करनी है। लड़का तो है नज़र में, लेकिन पैसे की समस्या मुँह बाये खड़ी है।

वातावरण में कुछ उदासी–सी छा गई। तभी जी.पी.ओ. की घड़ी ने टन्–टन् करके रात के दो बजाए। 'आज़ाद' ने जाना चाहा। बुढ़िया ने कभी–कभी मिलते रहने के लिए कहा।

आज़ाद ने फिर आने का वचन दिया और कल्पना को बुलाने के लिए कहा। वह अभी तक पढ़ रही थी। माँ की आवाज़ सुनकर वह तुरंत नीचे आई और बोली, "बाणभट्ट की कादंबरी पढ़ रही थी। बड़ी कठिन रचना है।"

"संसार में कोई काम कठिन नहीं। मन लगाकर पढ़ो और प्रथम श्रेणी लाओ। यही मेरा आशीर्वाद है।" 'आज़ाद' ने कहा।

"आप सबके आशीर्वाद से प्रथम तो सदा आई हूँ। इस बार भी आ सकती हूँ।"

"अच्छा, तो ये लो अपने प्रथम आने का इनाम"– कहकर 'आजाद' ने ब्रीफकेस कल्पना के हाथ में थमा दिया और वे बुढ़िया को प्रणामकर तुरंत वहाँ से चल दिए।

कल्पना ने ब्रीफकेस खोला। उसमें भरे थे सैकड़ों रुपये के नोट, शायद कल्पना के विवाह के लिए।

रुपये लेकर वृद्धा दरवाजे की ओर झपटी। 'आज़ाद' जा चुके थे। बारिश ने और भी भयंकर रूप धारण कर लिया था।

अँधेरे में ताकती वृद्धा न जाने क्या सोच रही थी ?

टिप्पणी– क्रांतिवीर चन्द्रशेखर 'आज़ाद' का जन्म मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के भाभरा नामक गाँव में हुआ था। उनके पिताजी एक बहुत साधारण–सा काम करते थे। चन्द्रशेखर की प्रारम्भिक शिक्षा भाभरा में ही हुई। आगे की शिक्षा के लिए वे वाराणसी (बनारस) गए। वहाँ वे स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने लगे। एक बार किसी सत्याग्रह में वे पकड़ लिए गए। मजिस्ट्रेट ने उनसे पूछा, '' तुम्हारा क्या नाम है ? ''

चन्द्रशेखर बोले, ''आज़ाद।''

''तुम्हारे पिताजी का क्या नाम है? ''

''स्वतंत्र।''

''तुम्हारा निवास कहाँ है?''

''जेलखाना।'

न्यायाधीश इन प्रश्नों के उत्तर सुनकर बिगड़ गया। उसने उन्हें पन्द्रह बेंत मारने की सजा दी।

उन्हें पंद्रह बेंत लगाए गए। हर बेंत पर उन्होंने आवाज बुलंद की 'भारत माता की जय'। वे तभी से क्रांतिकारियों के संगठन में शामिल हो गए। अंत में इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस से उनकी मुठभेड़ हुई। उनकी पिस्तौल में एक गोली बची थी। वह उन्होंने अपनी कनपटी में मारकर अपना जीवन समाप्त कर लिया। अल्फ्रेड पार्क में उनकी समाधि बनी है। वह पार्क अब 'आज़ाद पार्क' हो गया है।

अभ्यास

पाठ से

1. चन्द्रशेखर आजाद के बारे में आप क्या जानते हैं ?
2. क्रांतिकारियों ने 09 अगस्त 1925 की रात क्या किया ?
3. पुलिस को चकमा देने के लिए आजाद ने क्या किया ?
4. बुजुर्ग स्त्री के पूछे जाने पर आजाद ने अपना क्या अपराध बताया और आपकी नजर में क्या वह अपराध था ?
5. मजिस्ट्रेट द्वारा पूछने पर चन्द्रशेखर आजाद ने अपना क्या परिचय दिया ?
6. आजाद का अपराध जानने के बाद वृद्ध स्त्री के मन में आजाद के प्रति क्या भाव उत्पन्न हुए ?

पाठ से आगे

1. अगर वह वृद्ध स्त्री चंद्रशेखर आजाद के बारे में पुलिस को सूचना दे देती तो क्या होता? लिखिए।
2. यदि चंद्रशेखर आजाद की जगह आप होते तो रुपयों से भरे ब्रीफकेस का क्या करते ?
3. 'शाबाश ! संस्कृत पढ़ती हो तभी तो आधे पेट रहती हो' आजाद द्वारा ऐसा कहे जाने के पीछे क्या कारण आपको लगते हैं ?
4. आजाद एक–एक पराठे के दो–दो कौर बनाकर खा रहे थे। आपको जब जोरों की भूख लगती है, तो आप क्या–क्या करते हैं ?

भाषा से

1. • "बिटिया की है। घर में कोई मर्द तो है नहीं" वृद्ध स्त्री ने कहा।
   • पुलिस को चकमा देने के इरादे से 'आजाद' बीच में ही उतर पड़े थे।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में इकहरे और दुहरे उद्धरण चिह्न (' ' एवं " ") का प्रयोग हुआ है। बुजुर्ग स्त्री द्वारा कही गई बात को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करते हुए दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग हुआ है वहीं आजाद उपनाम के लिए इकहरा उद्धरण चिह्न प्रयुक्त हुआ है।

अर्थात् किसी के द्वारा कहे गए कथन या किसी महापुरुष की बात (आप्त वाक्य) को यथावत प्रस्तुत करने पर दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है वहीं किसी संज्ञा, नाम अथवा उपनाम के लिए इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है। पाठ में उपर्युक्त दोनों प्रकार के प्रयुक्त उद्धरण चिह्नों को पहचान कर रेखांकित कीजिए।

2. पाठ में प्रयुक्त हुए उर्दू भाषा के निम्नलिखित शब्दों के लिए हिंदी के समान अर्थ वाले शब्दों को ढूँढ़कर या पूछ कर लिखिए–

सजा, आवाज, शामिल, दरवाजे, नजर, फरार, लिबास, खून, जोश, रफ्तार।

3. अनौपचारिक पत्राचार उनके साथ किया जाता है, जिनसे हमारा व्यक्तिगत, पारिवारिक अथवा भावनात्मक संबंध होता है। इसे व्यक्तिगत पत्राचार भी कहा जाता है। इसलिए इन पत्रों में व्यक्तिगत सुख, दुःख, आशा अपेक्षा, निराशा का भावात्मक अंकन होता है। ये पत्र अपने परिवार के लोगों, मित्रों, और निकट संबंधियों को लिखे जाते हैं। इनके तीन प्रमुख भाग होते हैं –

शीर्ष भाग – इसमें अपना पता, दिनाँक, संबोधन वाक्य आते हैं

मध्य भाग – इस भाग में संदेश अथवा कथ्य रहता है

अन्त्य भाग – इसमें स्वनिर्देश के अंतर्गत अपना नाम, हस्ताक्षर और पता रहता है तथा आवश्यकतानुसार पत्र पाने वाले का नाम पता बाईं ओर लिखते हैं।

आप अपने छोटे भाई अथवा बहन को एक पत्र में लिखिए जिसमें क्रांतिकारियों की भूमिका का संक्षेप में वर्णन हो।

योग्यता विस्तार

1. स्वतंत्रता आन्दोलन में बलिदान देने वाले शहीदों के जीवन प्रसंगों पर कक्षा–कक्ष में चर्चा कीजिए।
2. आजकल जहाँ देश में एक ओर नक्सलवाद है वहीं दूसरी ओर आतंकवाद व अलगाववाद की घटनाएँ भी देखने–सुनने को मिलती हैं पर इनमें और राष्ट्र के लिए आहुति देनेवाले क्रांतिकारी के संगठन में क्या फर्क है। चर्चा कर प्रमुख विचारों को लिखिए।

5TSXY6

3. आजाद ने नोटों से भरा जो ब्रीफकेस कल्पना को दिया, वह संगठन के कार्यों के उपयोग के लिए एकत्रित किया गया धन था। उस धन को आजाद ने व्यक्ति विशेष के हित के लिए दिया था। उनका यह कार्य क्या उचित था? अपने विचार तर्क सहित लिखिए।